कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

48566

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

प्रवेशिका परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .....

परीक्षा का दिन.....

दिनांक ...

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14			
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

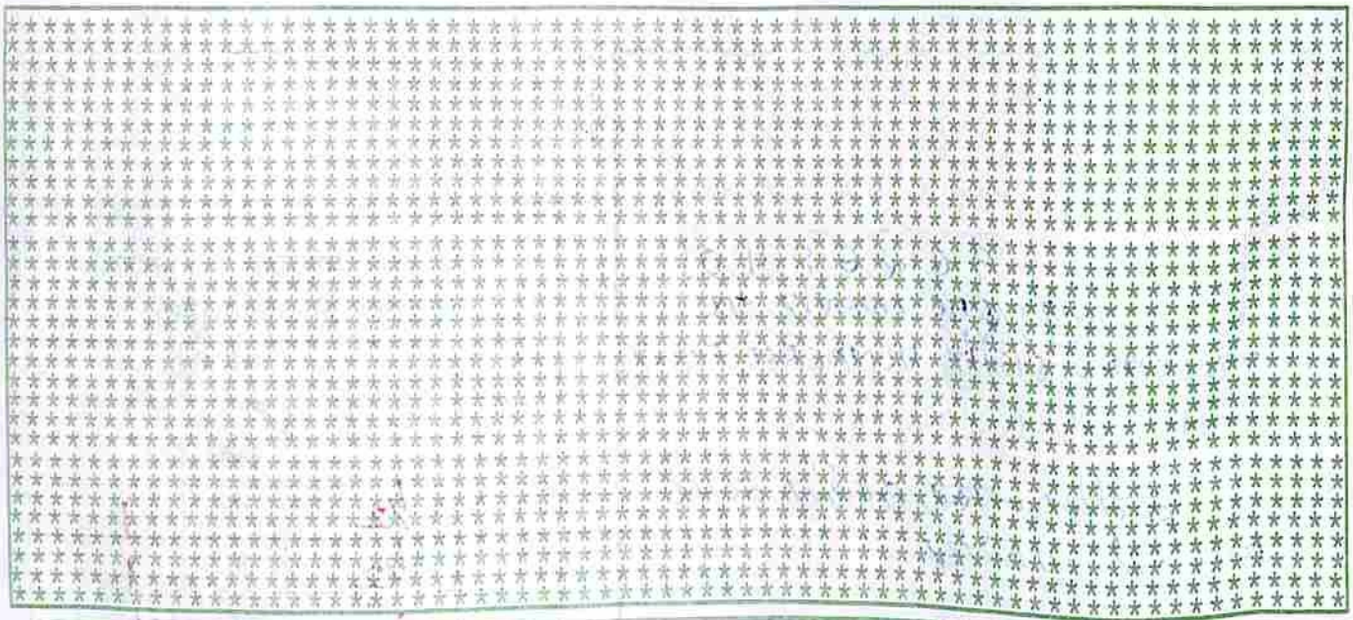

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जायेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़े नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तकें, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्यामेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस-पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-3

(9) ⇒ उत्तर ⇒

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते है। (1) सकर्मक क्रिया
(2) अकर्मक क्रिया

(1) सकर्मक क्रिया ⇒
जब किसी वाक्य मे निहित क्रिया का प्रभाव कर्त्ता की बजाय कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते है। जैसे:- मोहना पुस्तक पढ़ता है।

(2) अकर्मक क्रिया ⇒
जब वाक्य मे निहित क्रिया का प्रभाव ~~किस~~ कर्त्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है। जैसे:- मोहन पढ़ता है।

(10) ⇒ उत्तर ⇒
"राधा ने मिठाई खाई।"
उपर्युक्त वाक्य मे निहित
कारक ⇒ कर्त्ता कारक
काल ⇒ भूतकाल
वाच्य ⇒ कर्मवाच्य है।

(11) ⇒ उत्तर ⇒
बहुव्रीही समास ⇒
इस समास मे कोई पद प्रधान

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

नहीं होता। अर्थात् दोनो पद गौण होते हैं। इसमे दो शब्दो की विभक्तियो लोप होता है तथा एक नया पद बनता है। इस समास मे किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के लिए कोई रूढ़ नाम प्रयुक्त होता है। जैसे:- गजानन
पीताम्बर
लम्बोदर आदि हैं।

(12) ⇒ उत्तर ⇒

(क) धोबी ने कपड़े अच्छे धोये।
(ख) सुदामा, कृपण के पक्के मित्र थे।

(13) ⇒ उत्तर ⇒

(क) बालू से तेल निकालना ⇒
वाक्य प्रयोग ⇒ अर्थ ⇒ असम्भव कार्य करना।
पाँच मिनट मे हाथ से 100 पेज लिखना बालू से तेल निकालने जैसा है।

(ख) अंधे की लाठी होना ⇒
अर्थ ⇒ बुढ़ापे मे एकमात्र सहारा होना।
वाक्य प्रयोग ⇒
राम अपने बूढ़े मा-बाप के लिए "अन्धे की लाठी है।"

(14) ⇒ उत्तर ⇒
चट मगनी पट ब्याह ⇒ कार्य को शीघ्र-

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अति शीघ्र समाप्त करना।
⇒ चोर चोरी चट मंगनी पट ब्याह की तरह करते हैं।

(खण्ड-4)

(15) ⇒ उत्तर ⇒

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्य हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक क्षितिज मे "सेनापति" द्वारा रचित "कवित्त रत्नाकर" के ऋतु के वर्णन से लिया गया है। इसमे कवि ने बताया है कि शीत ऋतु के आने से गर्मी प्रभावहीन होकर शीत से मानो भयभीत हो।

व्याख्या ⇒ प्रस्तुत पद्य मे कवि 'सेनापति' बताना चाहते है कि अब ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो चुकी है और शीत ऋतु ने क्रोधित होकर संसार पर चढ़ाई शुरू कर दी है। इस कारण अग्नि भी कमजोर हो गई है और सूर्य भी बलहीन होकर बादलो के पीछे जा छिपा है। शीत ऋतु मे बर्फीलि हवाएँ चल रही हैं, मानो सीत सेना ने विषम तीर बरसाने आरम्भ कर दिये है। गरमी घर के किसी कोने मे जाकर छिपी बैठी है। अर्थात घरो के भीतर ही शीत ऋतु से बचा जा सकता है। आग के जलने से धुएँ के कारण लोगो की आँखो से आँसू बह रहे हैं और हाथ तापने के लिए आग पर गिरे जा रहे है। आग के थोड़ा-सा सुलगते ही उस पर झुक रहे हैं, मानो भयभीत गर्मी को शीत से बचाने के लिए उसे अपने हृदय से लगा रहे है। इनको देखकर ऐसा लगता है मानो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

सर्दी के भय से निबल अनल ने अपने हाथ पाँव पसार दिये हो और लोगो ने उसे छिपाने के लिए ग्रीष्म को छातियां की धाह मे छुपा रखा है।

भावार्थ ⇒
(i) भाषा सरल, सहज, समयानुकूल तथा शब्द स्टीक है।
(ii) कवि ने शब्दचित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।
(iii) उसके साथ-साथ कवि ने चमत्कारिक अलंकारिक शैली का भी प्रयोग किया है।
जैसे:- "सुरि सियराइ ....," तथा "पसारि पानि ....." आदि मे अनुप्रास अलंकार है।

(16) ⇒ उत्तर ⇒

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक "क्षितिज" से निबन्ध "ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से" लिया गया है। इसके रचयिता लेखक "रामधारी सिंह दिनकर" है। इन पंक्तियो मे लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्तियो के चरित्र का वर्णन किया है।

व्याख्या ⇒ लेखक कहता है कि लोग अपनी उपलब्धि पाकर खुश नही होते बल्की दूसरो की उपलब्धि देकर उससे ईर्ष्या करने लगते है। इस प्रकार व्यक्ति ईर्ष्यालु बन जाता

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

तथा ईर्ष्यालु से एक अच्छा निन्दक भी बन जाता है। उस प्रकार उसके मौलिक गुण नष्ट हो जाते हैं तथा उसका चरित्र नष्ट हो जाता है। वह केवल अपने अभाव तथा दूसरो की उन्नति के बारे मे दिन-रात सोचने लगता है तथा अपनी उन्नति के कार्यो को छोड़कर, दूसरो के पतन के कार्यो मे लग जाता है। उसका परिणाम यह होता है कि उस अन्य व्यक्ति का तो पतन नही होता परन्तु उसका (ईर्ष्यालु) का चरित्र अवश्य ही गिर जाता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरो की निन्दा कर उसे श्रेष्ठ कार्य समझने लगता है क्योंकि उसे लगता है कि इस कार्य से वह दूसरो को समाज की नजर मे नीचा दिखा रहा है और खुद उसका स्थान व सम्मान प्राप्त कर रहा है। परन्तु वास्तविकता यह नही होती है।

भावार्थ ⇒ भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहपूर्ण है।
(i) कवि ने 'ईर्ष्यालु व्यक्ति' के चरित्र की विशेषताओ का वर्णन किया है।
(ii) कवि की भाषा पूर्ण रूप से विकसित नही होने से कुछ जगहो पर अविकसितता प्रतीत होती है।

(17) ⇒ उत्तर ⇒

लक्ष्मण - परशुराम संवाद के अनुसार जब परशुराम के गुरु का अर्थात् शिव-धनुष श्री राम के हाथो खण्डित हुआ तो परशुराम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अधिक क्रोधित हुए उन्होंने इसे अपने गुरू का अपमान समझा तथा गुरू अपमान का बदला लेने के लिये परशुराम सभा मे आये और धनुष तोड़ने वाले को सभी राजाओ से अलग बुलाया। लेकिन लक्ष्मण ने बीच मे काट दी तो लक्ष्मण और परशुराम के बीच विवाद उत्पन्न हो गया। विवाद मे दोनो के चरित्रो का पता भी लग रहा था कि परशुराम तो आत्मप्रशंसी व्यक्ति है और बार-बार अपनी प्रशंसा किये जा रहे है और लक्ष्मण को बालक समझकर उसे बार-बार फरसा दिखाकर डराना चाहते है। किन्तु लक्ष्मण साहसी, उत्तेजी, वीर स्वभाव वाले व्यक्ति थे। वे परशुराम की बातो से नही डर रहे अर्थात् परशुराम की बातों का उन पर कोई प्रभाव नही पड़ रहा था। वे उत्तर पर उत्तर दिये जा रहे थे और साथ ही परशुराम को तर्कपूर्ण अपमानित भी कर रहे थे। इसलिए कवि ने यहाँ कहा है कि - लक्ष्मण की प्रत्युत्तर रूपी आहुती परशुराम रूपी क्रोधाग्नि को भड़का रही थी। अंत मे परशुराम लक्ष्मण को मारने के लिए उतावले हो गये लक्ष्मण ने और अपमानित किया। इस पर सारी सभा हाय-हाय करने लगी और लक्ष्मण की वाणी को कोसने लगी। उस समय श्रीराम ने लक्ष्मण की ओर आँखो से इशारा करके चुप रहने को कहा। इस प्रकार ~~सम~~ लक्ष्मण के परशुराम संवाद मे राम ने जल का कार्य किया अर्थात् उनके विवाद की क्रोधाग्नि को शांत करने का कार्य किया।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(18) ⇒ उत्तर ⇒
जैसलमेर के शासन के खिलाफ नागपुर से जैसलमेर आये स्वतन्त्रता सेनानि विर शिरोमणि सागरमल गोपा ने अनेक आन्दोलन, हड़ताले, भूख हड़ताले दर्जी आन्दोलन किये। सागर मल गोपा ने जैसलमेर की जनता को आन्दोलन हेतु उकसाया था। सागर ने "जैसलमेर का गुंडा शासन" तथा "रघुनाथ सिंह का मुकदमा" नामक पुस्तक लिख जैसलमेर के राजा स जवाहर सिंह रावलोत के शासन पर विद्रोह प्रकट किया था। इसलिए सागरमल गोपा बन्दी बनाकर जेल ले जाया गया तथा उसे महाराणा रावल से माफी मागने को कहा परन्तु सागर मल गोपा ने माँफी नही माँगी इस पर गुमान सिहं (पुलिस अधिक्षक) ने उससे दण्डनीति से काम लिया। परन्तु जेलर करणीदान ने उससे सामनीति से काम लिया और सागर से कहा कि "तुम तो बहुत स्वार्थी हो अपनी जिद के लिए अपने परिवार के कष्टो को भी अनदेखा कर रहे हो। तुम्हे ये सब करके क्या मिलेगा क्योंकि तुम तो स्वतंत्रता प्राप्त नही कर सकोगे अर्थात तुम्हारे मरने के बाद ये स्वतंत्रता किस काम की?" जब सागरमल गोपा ने गर्व से कहा माली बाग लगाता है ये जानकर कर भी कि ये फल उसे नही मिलेगें। फिर भी वह खून पसीने की कमाई से उन्हे उपजाता है, परहित के लिए। भागीरथ पृथ्वी पर गंगा निज स्वार्थ के लिए नही बल्की परहित के लिये लाया था। वह परहित इसी प्रकार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

स्वतंत्रता सेनानी भी पर हित के जीते-मरते हैं। इसके लिए वे अपने प्राणों की आहुति भी दे सकते हैं। इसलिए सागरमल गोपा ने कहा कि - वह एक स्वतंत्रता सेनानी है वह अपनी भूमी को स्वतंत्र चाहता है इसलिए वह अपनी आहुती भी दे सकता है। और आहुति देना ही उसका धर्म है।

(19) ⇒ गोपियाँ कृष्ण के स्व रस को देखते ही उनकी दासी बन गई। गोपियां उनके प्रेम-रस के लालच मे उनकी दासी बन गई। कृष्ण का स्व मनमोहक है, उनकी आंखे कटीली तथा मांथे पर मुकुट तथा चेहरे पर चन्द्रिका समान मुस्कान है। इस भव्य स्व को देखते ही कोई भी उनका भक्त या दास बन सकता था। इस भव्य स्व की चमाचौंध को देखकर ही गोपियाँ उनकी दासी सी हो गई थी। अर्थात् उनकी आंखे कृष्ण से हटाये न हटती थी।

(20) ⇒ "कल और आज" कविता के रचयिता नागार्जुन हैं। नागार्जुन ने कविता मे वर्षा ऋतु शुरुआत के पहले तथा वर्षा ऋतु के बाद का वर्णन किया है उन्होने बताया कि आज किसान दुखी है और धान के लहरा रहे है कल वो हताश थे। आज वर्षा के कारण मेढक इधर-उधर कुदक रहे थे वो कल तक धरती की

परीक्षार्थी उत्तर

गोद मे सोए हुए थे। कल तक रोते शांत हुआ करती थी किन्तु आज भँवरो की शहनाई गुंज उठी है। इस प्रकार कवि ने वर्षा ऋतु के महत्व और उससे आए जीवन मे उल्लास और हरियाली का वर्णन किया है। इस प्रकार नागार्जुन ने प्रकृति के उन्दा अनुभवो से प्रकृति के असीम वातावरण का अपने कौशल से शब्दचित्र शैली का प्रयोग करते हुए ऋतु चक्र का सजीव वर्णन किया है।

(२१) ⇒ उत्तर ⇒
कन्यादान कविता का मूल भाव है कि कवि समाज मे व्याप्त चिंता अर्थात माँ कि चिंता को प्रकट करना चाहता है। कवि बताना चाहता है कि वर्तमान मे बेटी का विवाह कम उम्र मे कर दिया जाता है तो माँ बहुत चिंतित व दुःखी होती है। बेटी को विदा करते समय उसका दुख दिखावा न होकर वास्तविक होता है क्योंकि बेटी वैवाहिक जीवन के कष्टो से अज्ञात होती है। इस प्रकार कन्यादान कविता का मूल भाव माँ कि चिन्ता को प्रकट करता है।

(२२) ⇒ एक अद्भुतपूर्व स्वप्न निबन्ध मे लेखक ने वर्णनात्मक, रचनात्मक, विनोदात्मक, उपदेशात्मक तथा हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक शैलीयो का प्रयोग किया है। लेकिन लेखक ने व्यंग-हास्य शैली का अत्यधिक प्रयोग किया है।

वर्णनात्मक शैली ⇒ निबन्ध को समझाने हेतु लेखक ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

रचनात्मक ⇒ लेखक ने निबन्ध मे तत्कालीन समाज को दर्शाने के लिए रचनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।

हास्य-व्यंग्य शैली ⇒ लेखक ने विनोदात्मक शैली का अत्यधिक प्रदर्शन किया है।

(23) ⇒ उत्तर ⇒
गौरा को किसी ने गुड़ की डली मे सुई लपेट कर खिला दी जो गुड़ के साथ अन्दर तक चली गई और हदय को छेद दिया। जिससे गौरा की मृत्यु हो गई।

(24) ⇒ क्योंकि वह अपनी दादी अमीना से बहुत प्रेम करता था। रोटियाँ बनाते वक्त उसकी दादी की उंगलियां गरम तवे से लगकर जल जाती है। इसलिए हामिद ने चिमटा खरीदने का निर्णय किया।

(25) ⇒ उत्तर ⇒
सेनापति की उक्त पंक्तियों मे वर्षा ऋतु का वर्णन है। अर्थात् सावन का वर्णन है।

(26) ⇒ उत्तर ⇒
मातृ-वन्दना मे कवि ने अपनी तन मन का श्रेय अपनी मातृभूमि को दिया है।

परीक्षार्थी उत्तर

(27) ⇒ उत्तर ⇒
कन्याकुमारी मे सबसे पहले सुर्योदय तथा सूर्या अस्त देखा जा सकता है। यही कन्याकुमारी का अध्यात्मिक महत्व है।

(28) ⇒ उत्तर ⇒ परनिन्दा के बारे मे दादू ने कहा है कि - परनिन्दा वे ही किया करते है जिनके मन मे राम नही बसते।

(29) ⇒ उत्तर
(i) तुलसीदास ⇒ जन्म ⇒ सवत 1589, मृत्यु ⇒ 1680
जन्मस्थलीन उत्तर प्रदेश, बादा जिला
पिता का नाम ⇒ आत्माराम
माता का नाम ⇒ हुलसी देवी।
ये हिन्दी साहित्य के अनूठे कवि है। इनकी अनेक रचनाएँ है। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएं ⇒
रामचरितमानस, पदावली, दोहावली, रामलला नहछू, रामाज्ञाप्रश्न, जानकी मंगल, पार्वती मंगल इत्यादि।

(ii) मुन्शी प्रेमचन्द ⇒ जन्म ⇒ 1880 ई०
मृत्यु ⇒ 1936 ई०
पिता का नाम ⇒ अजायब लाल
माता का नाम ⇒ आनन्दी देवी
प्रारम्भ मे ये उर्दू मे नवाब राय के नाम से लिखते थे इनका पहला कहानी सग्रह "सोजे वतन" है।
प्रमुख रचनाएं ⇒ गोदान, सोजे वतन, मानसरोवर (आठ भाग) पत्रिका माधुरी हंस आदि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(30) ⇒ उत्तर ⇒

(i) ⇒ यू-टर्न निषेध है।

(ii) ⇒ अन्दर जाना निषेध है।

(iii) ⇒ दाँयी तरफ जाना वर्जित है।

(iv) ⇒ पीछे की तरफ जाना वर्जित है।

(खण्ड-2)

(ग) उत्तर ⇒ (ख) राजस्थान मे घटता जल संकट

(i) प्रस्तावना ⇒

राजस्थान मे प्राचीन काल मे सरस्वती नदी बहती थी जिससे जल पूर्ति होती थी। परन्तु वर्तमान मे ये लुप्त हो चुकी है जिससे राज० मे जल संकट का स्तर गिरता जा रहा है।

(ii) जल संकट के कारण ⇒

एक तो राज० मे पहले ही जल संकट अधिकता थी लेकिन अब हो रहे जल दुरुपयोग के कारण जल संकट और अधिक गहरा हो गया है। जल संकट का प्रमुख कारण जल अतिदोहन है। आज प्रत्येक मनुष्य आवश्यकता से अधिक पानी खर्च करता है और साथ ही उसे दुषित भी करता है। पेड़ो की कटाई भी वर्तमान मे बढ रही जिससे भौम जल स्तर घटता जा रहा है क्योंकि पेड़ पानी के रिसाव को रोककर भौम जल स्तर मे वृद्धि करते है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अतः बढ़ती जनसं०, बढ़ता प्रदूषण, कटते पेड़, अनावश्यक उपयोग, अशिक्षित नागरिक आदि के कारण भी जल संकट बढ़ रहा है।

(iii) जल संकट निराकरण के उपाय ⇒ इसके लिए हम निम्न कदम उठा सकते हैं :-
(i) नागरिको को जल की उपयोगिता बताकर।
अनावश्यक उपयोग न करके।
(ii) जल का पुनः उपयोग करके।
(iii) पेड़ अधिक लगाकर।
(iv) वर्षा जल का संग्रहण करके।
(v) स्नान, बाँश आदि के समय उपयुक्त बर्तनो का
(vi) प्रयोग करके। हम जल संकट को रोक सकते है। जल संकट को देखते हुए राज० सरकार ने भी अनेक कार्यक्रम चलाये है जैसे :- जल स्वावलम्बन आदि। हमारा कर्त्तव्य है कि हम इन परियोजनाओ के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपने कर्त्तव्यों को भलि-भाँति पूरा करें।

(iv) उपसंहार ⇒ अन्त मे कहना चाहूँगी कि ⇒
"जल है तो कल है"
जल को व्यर्थ मे बहाये तथा जल संकट दूर करने आप सहयोग देवे तथा दूसरो को इस लिए प्रेरित करें। यदि आज हमने जल संरक्षण व प्रबंधन नही किया अर्थात् बढ़ते जल संकट को नही रोका तो भविष्य हम जीवित नही रह सकेगे। अतः जल एक बहुमूल्य इकाई है। इसका प्रयोग सावधानी से करें।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ⇒

(8) ⇒

गाँधी सड़क 518
लक्ष्मी नगर (जयपुर)
राजस्थान
1 मार्च 2018

सेवा में
मुख्य अभियंता विद्युत
बिजली विभाग
(जयपुर)

विषय :⇒ नियमित विद्युत सप्लाई न होने के कारण, एक शिकायती पत्र।

मान्यवर
मैं ईशान्त, लक्ष्मीनगर (जयपुर) से आपका, हमारे मौहल्ले में होने वाली विद्युत सप्लाई नियमित न होने वाली समस्या की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र अक्सर बिजली कटौती की समस्या होती है। इस समस्या के कारण हमें अनेक कठिनाईयों का सामना करना है। इसके कारण कई बार हमारे मौहल्ले में चोरियाँ भी हो गई हैं। इसके अलावा परीक्षा के दिन नजदीक है तथा बिजली न होने के कारण बच्चों को भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि हमारी समस्या की ओर ध्यान दें तथा उस मामले में उचित कार्यवाही की जाए।

आपका आभारी
ईशान्त।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 1

(1) ⇒ उत्तर ⇒
मेरे अनुसार इस गद्यांश का उचित शीर्षक "कबीर की नैतिकता" हो सकता है।

(2) ⇒ उत्तर ⇒
कबीर के व्यक्तित्व की विशेषता थी कि कबीर ने समाज मे रहकर समाज का बड़े समीप से निरक्षण किया। कबीर ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया तथा कथनी- करनी की एकता पर बल दिया।

(3) ⇒ उत्तर ⇒
धर्म के विषय मे कबीर का दृष्टिकोण है कि ⇒ कर्म करना, सेवा करना, अहिंसा अपना तथा निर्गुण भक्ति करना ही धर्म है।

(4) ⇒ उत्तर ⇒
भारतवासियो के प्रति कवि आक्रोशित है, क्योकी भारत का धर्म और समाज सोया है अर्थात प्रगति की ओर जागरूक नही है।

(5) ⇒ उत्तर ⇒
जब वीरता अप्रकट होने लगती है अर्थात समाप्त होने लगती है तब पुण्य का हास एवं स्वार्थ का उदय होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(6) ⇒ उत्तर ⇒

धर्म की मान मर्यादाओं को पूरा कर तथा लालच पर अंकुश लगाकर धर्म का पालन किया जा सकता है।

"समाप्त"

BSER-161/2017